Vol 7 Issue 1 Oct. 2017

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Awadhesh Kumar Shirotriya

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2017

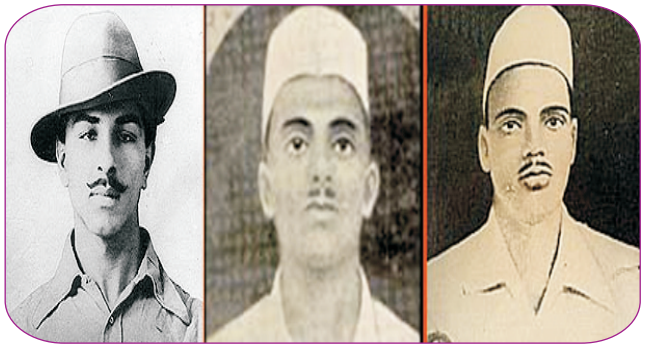

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में क्रान्तिकारियों का ऐतिहासिक योगदान

डॉ. विक्रम सिंह
प्राचार्य , जाहरवीर गोगा जी कन्या महाविद्यालय
छानी बड़ी, भादरा .

प्रस्तावना :–

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में नवजागरण आन्दोलनकारी के रूप में क्रान्तिकारियों की गौरवगाथा अविस्मरणीय है। यही वह सशक्त आन्दोलन था, जिसने भारतीयों में स्वदेशी स्ववेशभूषा, स्वत्व व स्वाभिमान का संचार किया। राजनीतिक पराधीनता के कारण भारतीय समाज पतन के गर्त में जा रहा था और पाश्चात्य साम्राज्यवादी शक्तियां इसका लाभ उठा रही थी। विषम स्थितियों से उभारकर राष्ट्रीय स्वतन्त्रता तथा स्वायत्त शासन की प्रेरणा भरने का महान कार्य जिन्होंने किया, उन सांस्कृतिक नवचेतना के अग्रदूतों में राजा राम मोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद, केशवचन्द्रसेन, महादेव गोविन्द रानाडे व मैडम कामा आदि का प्रमुख स्थान है।

भारत में राष्ट्रीय क्रांति का प्रथम विस्फोट 1857ई. में हुआ व संवैधानिक रूप में राष्ट्रीय आन्दोलन का वास्तविक सूत्रपात 1885ई. में कॉग्रेस की स्थापना के साथ हुआ, लेकिन इससे पूर्व अनेक सामाजिक व राजनीतिक संस्थाओं ने देश में राजनीतिक आन्दोलन के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका तैयार करने में सहायता की। यही राजनीतिक जागृति का काल कहा जाता है और इसी पुनर्जागरण या पुनरूत्थान के परिणाम स्वरूप क्रान्तिकारी आन्दोलन ने जन्म लिया।

स्वतन्त्र भारत में इन क्रान्तिकारियों के नाम पर कितनी ही राजनीतिक स्वार्थता की पूर्ति कर ली जाये किन्तु वह सम्मान इन्हें नहीं मिला है जिसके ये वास्तविक हकदार थे क्योंकि वह सम्मान तभी पूरा होगा, जबकि जिस प्रकार के भारत को अपना स्वप्न बनाकर इन्होंने अपने प्राणों की आहुति दे डाली, इनका वह सपना आजाद भारत में पूरा होना चाहिए था।

प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम की असफलता के बाद किये गए दमन व अन्य कारणों से खुले विद्रोह की परिस्थितियॉ नहीं थी। किन्तु नई परिस्थितियों में स्वाधीनता प्रेमियों में गुप्त क्रान्तिकारी समितियां बनाकर राज्य के विरूद्ध कार्यवाहियां करने का रूझान बढ़ा और इस प्रकार उन्नीसवीं शताब्दी के पांच दशकों में भारत में क्रान्तिकारी आन्दोलन का जन्म हो गया।

उल्लेखनीय है कि भारतीय संग्राम के ये क्रान्तिकारी यौद्धा केवल भारत की राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए ही संघर्ष नहीं कर रहे थे। लेकिन वास्तव में वे जनता को राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक आदि सभी क्षेत्रों में मुक्ति दिलाने के लिए प्रयत्नशील थे। भारतीय समाज, विशेषतया, बहुसंख्यक समाज सती प्रथा, बाल विवाह, वृद्ध विवाह, छुआ–छूत, जातिवाद, तंत्रवाद आदि अनेक कुरीतियों से जर्जर हो गया था और उसका स्वाभाविक विकास थम गया था। इन कुरीतियों के विरूद्ध सुधारवादी आन्दोलन चलाए। इन आन्दोलनों ने राजनीतिक स्वाधनीता की आकाक्षाओं को बल दिया।

भारत के नव जागरण में धार्मिक व सामाजिक आन्दोलनों, विशेषकर आर्य समाज का विशेष योगदान रहा है आर इसी प्राकर भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में भी आर्य समाज ने मील के पत्थर का काम किया है। वीर सावरकर, मदनलाल धींगड़ा, सरदार अजीत सिंह, शहीद भगत सिंह, लाला लाजपतराय, महाशय रत्नचन्द्र, प्रताप सिंह बारहठ, केसरी सिंह वारहठ, जोरावर सिंह, जगत राम हरियाणवी, बाबा पृथ्वी सिंह आजाद, ठाकुर रोशन सिंह, विष्णुशरण, दुबलिस, श्रीमती रामरखी, रामप्रसाद बिस्मिल आदि ऐसे नाम है जिनके बिना भारतीय स्वतंत्रता की प्राप्ति असम्भव थी।

हमारे देश में सन् 1857 से लेकर 1947 स्वतंत्रता प्राप्ति तक दो प्रकार के संघर्ष चले– सशस्त्र संघर्ष तथा वैधानिक आन्दोलन। दोनों का उद्देश्य देश को अंग्रेजी राज से मुक्त करना था। दोनों विचारधाराओं ने अपनी–अपनी शक्ति के अनुसार स्वतंत्रता संघर्ष में योगदान दिया किन्तु दोनों का समान उद्देश्य होते हुए भी साधन अलग थे। एक की पद्धति में दूसरे को बिल्कुल विश्वास न था।

हमारी स्वतन्त्रता की प्राप्ति के बाद दोनों का उद्देश्य पूरा हो गया तथा दोनों आन्दोलन बंद हो गये। ये दोनों आन्दोलन ही उस समय की विकट परिस्थितियों की उपज थे।। इसलिए हमें यह याद रखना चाहिए कि यदि हम किसी आन्दोलन के बारे में ठीक अनुमान लगाना चाहे या उसका सही मूल्यांकन करना चाहें तो उस समय की परिस्थिती का निरन्तर ध्यान रखना पड़ेगा।

इसमें संदेह नहीं कि कॉग्रेस ने शुरू–शुरू में राजनीतिक अधिकारों के लिए वैधानिक आन्दोलन किये। सन् 1929 से पूर्व तक कांग्रेस में पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव पास नहीं हो सका था और उसके पूर्व कॉग्रेस औपनिवेशिक स्वराज्य या अधिराज्य स्थिति की मांग करती रही। कॉग्रेस ने ब्रिटिश सरकार को अधिकारों के लिए अनेक याचिकाऍ भेजी, पर सरकार ने कुछ नहीं किया। महात्मा गांधी के कहने पर प्रथम विश्वयुद्ध में भारत ने अग्रेंजों को सहायता दी लेकिन बदले में युद्ध के बाद भारतीयों को कुछ भी नहीं मिला, यातनाओं को छोड़कर। इसलिए शचीन्द्र सान्याल, पिगलें, रास बिहारी बोस, लाला हरदयाल और परमानन्द को यह विश्वास हो

गया था कि सशस्त्र क्रान्ति के बिना पूर्ण स्वतन्त्रता नहीं मिल सकती। क्रान्तिकारी राजनीतिक अधिकारों या औपनिवेशिक स्वराज्य की मांग नहीं करते थे। वे तो भारत के लिए पूर्ण स्वतन्त्रता चाहते थे। यही कारण है कि उन्होंने क्रान्ति करने की कोशिश की थी, जो देश द्रोहियों के कारण असफल हो गई।

प्रथम युद्ध में दी गई सहायता के बदले में भारतीयों को रौलट ऐक्ट का इनाम मिला। जिसमें भारतीयों पर असहाय दण्ड दिये गए। महात्मा गांधी ने कलकत्ता अधिवेशन में यह वायदा किया कि देश मेरे पीछे चले तो मैं एक वर्ष के भीतर स्वराज्य ला दूंगा। क्रान्तिकारियों ने गांधी के नये प्रयोग को देखने के लिए दो वर्ष तक अपना आन्दोलन बंद कर दिया। दो वर्ष तक कॉग्रेस का असहयोग और खिलाफत आन्दोलन चला, लेकिन स्वराज्य समीप नहीं आया। इसलिए क्रान्तिकारी दल को यह दृढ़ विश्वास हो गया कि यह निरंकुश सरकार वैधानिक आन्दोलन से कुछ देने वाले नहीं है।

इसलिए उन्होंने जो वक्तव्य दिया, उससे स्पष्ट है कि क्रान्तिकारी परिस्थितियों से मजबूर होकर बम फैंकते थे, और वह भी निरंकुश सरकार को यह याद कराने के लिए कि व जनता पर अत्याचार करने में सीमा से अधिक न बढ़ जाए। क्रान्तिकारियों का उद्देश्य केवल अंग्रेजों से राष्ट्रीय अपमान का बदला लेना ही नहीं था बल्कि देश में सशस्त्र क्रान्ति द्वारा ब्रिटिश सरकार को निकाल कर देश को आजाद करना और फिर यहॉ पर मजदूरों और किसानों का राज्य कायम करना था। उन्होंने देखा कि रूस में इसी तरह क्रान्ति हुई थी। अतः वे सेनाओं में विद्रोह कराने के लिए भी निरन्तर यत्न करते थे।

अहिंसात्मक साधनों में क्रान्तिकारियों को विश्वास नहीं था। उनका यह दृढ़ विश्वास था कि सत्याग्रह द्वारा अंग्रेज भारत से नहीं निकलेंगे। असहयोग आन्दोलन की असफलता ने उनके इस विश्वास को पक्का कर दिया था। गांधी के साधनों का आधार अंहिसात्मक था। जब 23 दिसम्बर 1929 को लार्ड इरविन की ट्रेन को उड़ाने का यत्न किया गया, तब गांधी ने अपने एक लेख 'बम की पूजा' में इस कार्य की निन्दा की और लाहौर में कांग्रेस ने इस हेतू एक प्रस्ताव भी पास किया था। इसका प्रतियुत्तर क्रान्तिकारियों ने 'बम्ब का प्रदर्शन' नामक पर्चा निकाल कर दिया था। इसमें उन्होंने अपने साधनों और उद्देश्यों पर पूर्ण प्रकाश डाला था। इसमें उन्होंने लिखा–

''कांग्रेस ने सन् 1923 में ब्रिटिश सरकार से कई विषयों पर
बात करने के लिए कहा था, लेकिन सरकार ने उनकी तनिक
भी परवाह नहीं की और राष्ट्र का अपमान भी किया।
इसलिए सरकार की नीति का विरोध करने और राष्ट्रीय अपमान
का बदना लेने के लिए हमने उसकी ट्रेन के नीचे बम रखा था।''

इस 'बम की फिलॉस्फी' नामक पर्चे में आगे कहा गया कि गांधी अहिंसात्मक आन्दोलन पर बहुत बल देते हैं। इस हथियार से कितने विदेशी शासकों का मन परिवर्तित हुआ तथा राष्ट्रीय आकांक्षाओं की पूर्ति कहां तक हुई है। जनरल डायर, लार्ड रीडिंग, लार्ड इरविन, सर माइकेल ओडवायर इनमें किसका दिल बदला है? भारत का कौन हितैषी बना है? इसलिए सारी ब्रिटिश जाति को प्रेम और अहिंसा द्वारा जीतने की आशा व्यर्थ है। गांधी जी कहते है कि राष्ट्रीय जागृति असहयोग आन्दोलन द्वारा उत्पन्न हुई है, लेकिन यह गलत है। गांधी जी और उनके नेतृत्व में चल रही कांग्रेस और क्रान्तिकारी की नीति में यह मौलिक भेद है।

क्रान्तिकारी ब्रिटिश सरकार को निकालने के लिए शक्ति का प्रयोग अनिवार्य समझते थे। उस समय की परिस्थिति के संदर्भ में डॉ. पट्टाभिसीतारमैया ने गांधी द्वारा लिखा पत्र लार्ड इरविन में शक्ति व दबाव के द्वारा नमक कानून तोड़ने की स्पष्ट पुष्टि होती है। लेकिन ब्रिटिश सरकार बहुत निरंकुश थी और उसे खदेड़ने के लिए शक्ति की आवश्यकता थी। इतना सब कुछ होते हुए भी गांधी का दृढ़ विश्वास बना रहा कि सशस्त्र क्रान्ति सारे देश में सम्भव नहीं है और उसके द्वारा स्वतन्त्रता नहीं मिल सकती। जवाहरलाल नेहरू ने भी माना कि जन जागृति फैलाने में गांधी व कांग्रेस ने अपने तरीकों को अपनाया वहीं क्रान्तिकारियों ने अपने ढंग से इसमे तीव्रता लाने का कार्य किया। इसकी पुष्टि डा. पट्टाभिसीतारमैया ने कि–

''कराची में कांग्रेस के अधिवेशन के समय सरदार भगतसिंह का नाम भारत में उतना ही लोकप्रिय हो चुका था, जितना गांधी जी का। इसलिए कांग्रेस ने भगतसिंह, राजगुरू और सुखदेव के बलिदानों की सराहना एक प्रस्ताव पास किया।''

सुभाषचन्द्र बोस आदि क्रान्तिकारी यही समझते थे कि देश के अन्दरूनी स्वतन्त्रता आन्दोलन को किसी बाहरी सशस्त्र आन्दोलन से शक्ति देना बहुत जरूरी है, वरना ब्रिटिश नहीं निकलेंगे। इसलिए उन्होंने जापानियों और जर्मनी की सहायता मांगी थी और आजाद हिन्द फौज का गठित किया था। नेताजी व फौज के कार्यों तथा बाद में उन पर चले हुए मुकदमों से सेना में भी बड़ी क्रान्ति की लहर आ गई थी। इस तरह से कांग्रेस के वैधानिक आन्दोलनों और क्रान्तिकारी आन्दोलन ने एक–दूसरे के लिए पूरक का कार्य किया। ब्रिटिश सरकार क्रान्तिकारियों से बहुत डरती थी। इनका मार्ग कठिन था। एक तरफ गुप्तचर पुलिस उनके पीछे लगी रहती थी, और दूसरी तरफ वैधानिक आन्दोलनों को चलाने वाले भी उनकी निन्दा करते थे। उनको जनता का सहयोग भी प्राप्त नहीं हो सकता था, क्योंकि वे कांग्रेस की तरह जनता में ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध खुला प्रचार नहीं कर सकते थे।

निःसन्देह जब तक स्वतन्त्र भारत का अस्तित्व रहेगा, तक तब भी भारतीय जन–मानस क्रान्तिकारियों के ऋण से उऋण हो नहीं सकेगा। इस प्रकार हम देखते हैं कि क्रान्तिकारियों ने न केवल अंग्रेजों के विरूद्ध हथियार ही उठाए थे बल्कि फांसी का फन्दा सामने होने पर भी वे देश की एकता के लिए भी उतने ही प्रयास करते रहे जितने देश की स्वतन्त्रता के लिए। यदि आज क्रान्तिकारियों के विचारों का प्रचार–प्रसार किया जाये तो भारत की अनेक समस्याएं स्वतः ही समाप्त हो जाएगी। साथ ही इन क्रान्तिकारियों ने राष्ट्रीय नवजागरण के आयाम, स्वाधीनता संघर्ष को निर्णायक दिशा दी।

VOLUME - 7 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2017

सन्दर्भ सूची

1. बी. नारायण : सोशल हिस्ट्री ऑफ मॉर्डन इण्डिया, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ।
2. रमेशचन्द दत्त : ब्रिटिश भारत का इतिहास, ज्ञात मण्डल प्रकाशन, काशी।
3. बी.एस. नर्वण : आधुनिक भारतीय चिन्तन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
4. सत्यकेतू विद्यालंकर : आर्य समाज का इतिहास, श्री सरस्वती सदन प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. सुन्दर लाल : भारत में अंग्रेजी राज, द्वितीय खण्ड, सूचना व प्रसारण मन्त्रालय, नई दिल्ली।
6. ए. आर. देसाई : भारतीय राष्ट्रवाद की सामयिक पृष्ठभूमि, मैकमिलन प्रकाशन, दिल्ली।
7. रामधारी सिंह दिनकर :संस्कृति के चार अध्याय, दिल्ली, 1956।
8. के. पी. करूणाकरण : रिलिजन एंड पॉलटिक्ल अवेकिंग इन इण्डिया , मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ।
9. रणजीत सिंह : भारत का स्वतन्त्रता आन्दोलन एवं संवैधानिक विकास, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
10. ताराचंद : भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास, प्रकाशन विभाग, सूचना व प्रसारण मन्त्रालय, भारत सरकार, दिल्ली, द्वितीय प्रकाशन–1987।
11. विपिन्न चन्द्र : भारत का स्वतन्त्रता संग्राम का इतिहास, प्रकाशन दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली–1991

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com